

अनुकूलन सिद्धांत

- Dr. B.K.

अनुकूलन सिद्धांत, पैव्लोव नामक शरीरशास्त्रज्ञ द्वारा प्रतिपादित किया गया है। उन्होंने अनुकूलन के बारे में कहा कि जब किसी स्वाभाविक उत्तेजना के साथ तटस्थ उत्तेजना को बार-बार दुहराया जाता है तो तटस्थ उत्तेजना से वही प्रतिक्रिया उत्पन्न होने लगती है जो पहले स्वाभाविक उत्तेजना से उत्पन्न हुई थी। पैव्लोव ने भोजन को स्वाभाविक उत्तेजना माना और भोजन देखकर 'लार टपकना' को स्वाभाविक प्रतिक्रिया। उन्होंने बेल लार टपकने के लिए घंटी की आवाज को एक तटस्थ उत्तेजना माना और घंटी की आवाज को सुनकर भोजन की अनुपस्थिति में लार टपकना को अस्वाभाविक प्रतिक्रिया। यदि कुत्रा घंटी की आवाज पर लार गिरता है तो इसे अनुकूलन कहा जाएगा। पैव्लोव ने भोजन को (unconditioned stimulus, US), घंटी को conditioned stimulus, CS, 'लार टपकना' को (भोजन देख) (unconditioned response, UR) तथा घंटी की आवाज पर 'लार टपकना' को (conditioned response, CR) कहा।

अनुकूलन - सिद्धांत की विशेषताएँ

① प्रेरक - पेंवेलव के सिद्धांत के अनुसार सीखने के लिए प्रेरक आवश्यक है, यदि कुत्ता भूखा नहीं होता तो वह संभव है प्रतिक्रिया नहीं करता।

② प्रबलन - पेंवेलव के अनुसार स्वाभाविक उत्तेजना (भोजन) ^{तथा} तटस्थ उत्तेजना (घंटी) के युग्मन को प्रबलन कहते हैं। पेंवेलव के प्रयोग में कुत्ता भोजन देखकर लार टपकाता है। (बाद में) पहले घंटी बजाया जाता है तब कुत्ते को भोजन दिया गया। कुत्ते भोजन के बिना सिर्फ घंटी के आवाज पर लार टपकाना सीख लेता है लेकिन जब बहुत देर बाद बार-बार भोजन न देकर सिर्फ घंटी बजाया गया तो कुत्ता लार टपकाना छोड़ दिया जिसे पेंवेलव ने विलोप कहा।

③ क्रमः अनुकूलन स्थापित होने के लिए ^{अव्यक्त} क्रम आवश्यक है जिससे युगमता से अनुकूलन स्थापित हो सके। पेंवेलव ने कहा कि अनुकूलन को जल्दी स्थापित होने के लिए भोजन (UD) के पहले

बंदी (LD) को उपलब्ध किया जाये।
 (4) प्रयोगात्मक परिलक्षित का नियंत्रण - अधिक डंड; तीव्र प्रकाश, तीव्र आवाज आदि उत्तेजना बन सकती है। अतः अनुकूलन स्थापित होने के लिए प्रयोगात्मक परिलक्षित का नियंत्रण आवश्यक है।

(5) उत्तेजना सामान्यीकरण - जब प्राणी एक तटस्थ उत्तेजना के प्रति कोई अनुकूलित प्रतिक्रिया (PR) सीख लेता है तो उससे मिलना जुलना उत्तेजना के प्रति भी तार टपकाना सीख लेता है।

उपर्युक्त संदर्भ में वाटसन एवं वेनर ने अनवर्ड नामक बच्चे का पर प्रयोग कर पाया कि जब अनवर्ड उजले चूहे से डरने लगे तो बाद में उजले वस्तु से भी डरने लगे।

(6) उत्तेजना विभेद - प्राणी दो तटस्थ उत्तेजनाओं के बीच अंतर कर सकता है। यदि कुत्ते को एक निश्चित ध्वनी वेग के साथ अनुकूलन सिखाया गया तो कुत्ता उस ध्वनी वेग से अधिक या कम वेग के साथ तार नहीं टपकाया।

(iv) स्वतः पुनरापित - कुत्ते ने प्रबलन के आभाव में घंटी की आवाज (CS) के प्रति प्रतिक्रिया (CR) करना छोड़ दिया, परन्तु कुछ देर आराम के बाद उसने फिर घंटी की आवाज के प्रति अनुक्रिया किया जिसे पैवलव ने स्वतः पुनरापित कहा।

शुणः ① पैवलव के सीखने के सिद्धांत पर अनेक मनोवैज्ञानिक ने अपने शोध में अनुकूलन का उपयोग किया।

(ii) इस सिद्धांत का एक गुण यह भी है कि शिक्षण - सिद्धांत के आधार पर नींद चिकित्सा तथा औषध-चिकित्सा को बहुत बड़ा बल मिला।

(iii) पैवलव का सिद्धांत का एक अन्य गुण यह है कि इस सिद्धांत का प्रबलन, विलोप, सामान्यीकरण जैसे तन्त्र लिक्नर के सिद्धांत में भी मिलता है।

(iv) इस सिद्धांत का उपयोग नैदानिक मनोविज्ञान में रोगी के चिकित्सा के लिए किया जाता है।

दोष: -

(i) इस सिद्धांत द्वारा नियंत्रित परिदृश्य में प्रयोग किया जाता है और अनुकूलन स्थापित की जाती है लेकिन सामान्य जीवन में नियंत्रण संभव नहीं है।

(ii) इसका दोष यह है कि पैवलव ने पैवलव के मोजन के प्रति कुत्तों के लार स्राव की व्याख्या नहीं की क्योंकि घंटी भी आवाज पर होने वाली प्रतिक्रियाओं की व्याख्या की।

(iii) पैवलव का कुत्ता निष्क्रिय होकर अनुकूलन सीखा परन्तु ~~हरेक~~ हरेक परिदृश्य में ऐसा नहीं होता है। अधिकांश परिदृश्य में हम अपनी रव-वी, आवश्यकता, मनोवृत्ति आदि के अनुकूल सीखते हैं और सक्रिय रहते हैं।

(iv) इस सिद्धांत में अभ्यास तथा पुनरावृत्ति पर अधिक बल दिया गया लेकिन कभी-कभी हम बिना अभ्यास और ~~पुनरावृत्ति~~ पुनरावृत्ति के भी सीखते हैं।